

Q. No Part - I Hindi Home.

अरविदास शर्मा कहानी का शीर्षक -

पादमाश्रम - डॉ० सुनील - पृष्ठ ५१५

रामपूर कोलकाता, पटना १९४२

ह

देवि-रत्नालाल ब्रह्म कहानी का लेखन पान है

मित्रों - माँ और भई कहानी सुनाती है। लाहौर उसका जन्म
स्थल है। अब: उसका घर से उसके जीवन के घर बहता है। मजबूती
के साथ लड़ते हुए हैं। साम्प्रदायिकता के गहराने सभी में भी उठते
उभरते हैं कि यह स्थिति अब: सामान्य हो जाएगी और उठे
और आया नहीं। छोड़ना पड़ेगा। किन्तु श्रीदे-श्रीदे स्थिति
गंभीर होनी जाती है। श्रीदे-श्रीदे के खेतों पर यह खतरा छोड़ने
की संभावनाओं के पक्ष में बातें करता है। श्रीदे उनके विचार
के विपरीत उसे लाहौर में ही रहने की सलाह देता है। सभी
सुखों का आश्वासन भी देता है। देवि-रत्नालाल तो पक्षी-पक्षी
ही थे। अब: वे वही खेत जाते हैं। किन्तु स्थिति गंभीर होने
पर वे आया घर छोड़कर श्रीदे के घर चले जाते हैं।
किन्तु वहाँ भी वे सुखस्थित नहीं थे। अब: श्रीदे उठे। अपने
मित्र के घर में खरपा देने हैं। उस खरपा में रहकर
वे शहर की स्थितियों का आकलन करते हैं। वे मित्र
औरव साहब के घर में रह रहे हैं। वहाँ केवल बहाने
वालों की बरगती की आसक्ति आवाजें ही सुन पाते हैं।
किसी का देख नहीं पाते। समझ बड़ा मुश्किल हो जाता है।
उनके लिए औरव साहब के घर से खाना आता है। मित्र
यह कि विचार को भी विचार है। और उससे दोली



संस्कृत

जान बनानी थी।

शरणादाता शीर्षक कहानी मानवीय संवेदना को
आकर्षण देने वाली कहानी है। इस कहानी में प्रत्यक्ष रूप से
कोही पात्र नहीं है - बरिन्दरलाल एवं खीरुदीन किन्तु कुछ
वीरता पात्र भी हैं जो काम सामने नहीं आते किन्तु अपनी
महत्त्वपूर्ण भूमिका से कथानक का जीवन सँभल
सुरक्षित कर देते हैं। इन मानवीय संवेदना को जागरूक एवं
मिथिला की प्रकृति को देखा है और इसीलिए पात्र
हैं जो विविध।



स्थापित कर लोते हैं। रात में चारों ओर
से आल्लाहो अकबर की आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं।
घरों को जलाने से उठते बाले चुन्ना का तुलार पिटो
लाई पड़ा है। ऐसे वातावरण में आगले दिन उठने
के खाने की रीटियों के बीच एक कागज के टुकड़े
पर जहर की चेतावनी लिखी मिलती है। वह सारा
खाना बिलार को दिया देना है और फलनः बिलार
मर जाता है। ऐसे में क्यों खाना निरापेक्ष नहीं
पाता उसी रात वह क्यों से आग लड़ता देना है और
क्यों-क्यों आत्महत्या करने लगता है। देवि-समाज
एक सरल और आत्मागत लक्ष्य है। उसके नीचे
प्रबल जीवि विरा है। वह जितनी सरलता से
स्वीकृति पर विश्वास कर लेता है उतनी ही आसानी
से खींच सके पर भी। वह मूल रूप से एक मनुष्य
है। सामान्य मानव की समस्त विशेषताएं उसके
चरित्र में घुली हुयी हैं। साम्प्रदायिक धृष्टा के
बीच भी वह अविचलित है। वह यह कल्पना भी नहीं
कर सकता कि साम्प्रदायिक धृष्टा की परम परिणति
हिंदुओं की हत्या और लूट में परिवर्तित हो जाएगी।
स्वीकृति इस कहानी का दूसरा अन्वय पक्ष
है। वह एक आकस्मिकी घटना है। कहानी के आरंभ में
वह मानवीय मूल्यों के लिए समर्पित दिवसाई पड़ा है।
किंतु धीरे-धीरे सामाजिक दशावस्था के समक्ष
वह घुटने से टेक देता है। वह कथानक देविद
लाल का मित्र है। वह बहुसंख्यक समुदाय का एक
सामान्य सदस्य है। समाज में न केवल इसकी
जोड़बूझ है वरन् वह समाज-समय पर समाज का
मार्गदर्शन भी करता है। लाहौर में जब साम्प्र
दायिकता की लहर में सारा शहर दूग्य हो गई

लगाता है तब देवि-दरलाल को वहाँ खड़ा होना
पिए निराश्रित बनती है। एवम् १६ वीं वर्ष को
केलिय हो-गने लगता है, यह जानकर रहीशुदी १३३०
हो जाता है और देवि-दरलाल से लाहौर न छोड़ने का
आग्रह करता है। उसे अपने सामाजिक सम्बन्धों पर भार
विशेष है कि उसके इच्छा का सारा समाज सम्मान करे।
उस पर असोसा कर देवि-दरलाल वही शक जाना है कि
समाज-व्यवस्था ही रहीशुदी बदल जाना है। और फिर देवि-
लाल किसी तरह जान बूझकर वहाँ से भाग निकलने है।
रहीशुदी १ एक गतिशील पात्र है जो परिस्थिति
१२। बदल जाता है। तभी तो आदर्श से प्रेरित होकर १६
आपने मित्र को वही शकने का आग्रह करता है कि
समाज के उद्धार को नहीं मेल पाता और अंततः उसे
श्री १ साधक के अहाँ रखना है। रहीशुदी की मंशा
साथ है कि उसके दोस्त की मूल्य उसके घर में नहीं
होनी चाहिए। अब १६ उसे अपने पालन दूर कर देना है
जहाँ उसके मित्र के लिए नहीं होना। अंततः रहीशुदी
जानी है।

